REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

फणीश्वरनाथ रेणु और आँचलिक कथा

डॉ. विनयकुमार एस. चौधरी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना :

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार राज्य के अन्तर्गत सुदूर पूर्व पूर्णिया जिले के औराही–हिंगाना गाँव में 4 मार्च, 1921 ई. में हुआ था। इनकि प्रारंभिक शिक्षा अररिया और फारविसगंज में प्राप्त हुई।

लतिका उसी सरकारी अस्पताल में नर्स की नौकरी करती थी। वह बंगाली लड़की थी अवश्य, किन्तु, बिहारी संस्कृति के प्रति उसका अत्यधिक झुकाव था। उनकी दवा दारू, देख–रेख आदि की सारी जिम्मेदारी नर्स लतिका चौधरी पर सौंपी गयी थी। वह इनकी मासूमियत से काफी प्रभावित होकर बड़ी तत्परता एवं इमानदारी के साथ तब तक उनकी अनवरत सेवा करती रही, जबतक वे स्वस्थ होकर अस्पताल से चले नहीं गये। जेल से छुटने के बाद वे साहित्य सृजन में संलग्न हो गये। और तबसे निरंतर उनकी लेखनी चलती रही।

1948 ई. में रेणु जी असाध्य रोग टी.बी. से ग्रस्त हो गये और पुनः पटना के सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिये गये जहाँ लतिका चौधरी ने इनकी कठिन बीमारी को देखकर वह समर्पित भाव से उनकी सेवा करने में जूट गयी। यद्यापि चिकित्सकों ने गंभीर स्थिति को देखते हुए खतरे की घंटीबजने की उम्मीद बतादी थी। लेकिन नर्स लतिका ने अहर्निश इनकी अनवरत सेवा –सुश्रूषा कर इन्हें मौत के मुँह से बाहर निकल दिया।

लतिका चौधरी पटना के सब्जीबाग में 1951ई. के आसपास डेरा लेकर रहती थी। रेणू और लतिका एक दूसरे से न केवल पूर्णतः प्रभावित हो गये थे, बल्कि प्रेम भी करने लगे थे। जब अस्पताल से रेणु जी स्वस्थ होकर बाहर आये तो लतिका ने बड़े प्यार से पूछा–''बीमारी होने पर यहाँरहते हो, लेकिन ज्योंहि स्वस्थहो जाते हो,.....गाँव चले जाते हो?...'' तो कहाँ जाऊँ'' रेणु ने बड़ी मासूमियत भाव से कहा–

'क्या तुम अपने घर में रखोगी...?

उनकी सहजता और शराफता से प्रभावित होकर अपने साथ रहने की स्वीकृति दे दी और वे 'लतिका' के साथ पटना में ही रहने लग गये। एक अनजाने नौजवान के साथ एक कुमारी युवती लड़की को अहर्निश एक साथ रहते देखकर आज के परिवेश में भला किसके मन में शंका उत्पन्न नहीं हो सकती....? आखिर हुआ भी यही धीरे–धीरे समाज में यह चर्चा का विषय बन गया और लोगों के बीच खुलकर दोनों प्रेमी–प्रेमिका की आलोचना होने लगी। सामाजिक आलोचना सेऊब कर रेणु जी नेलतिका के समक्ष वैवाहिक प्रस्ताव पेश किया, जिसे उसने थोड़ी झिझक के पश्चात् स्वीकारकर लिया और दोनों हजारीबाग में जाकरविधिवत वैवाहिक बंधन में बँध गये।

गाँव में पद्मा चार बच्चों के साथ अपने बिखड़े दाम्पत्य पर आँसू बहारही थी और इधर रेणु जी तीसरीशादी कर, यौवन के दहलीज पर खड़ी 'लतिका' के साथ प्रेम की शहनाईबजा रहे थे। हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार तुलसीदास ने ठीक की कहा है– ''सामर्थ में न कछु दोष गोसाई''।पुर्णरूपेण टी.बी. की बीमारी से ग्रसित होने के कारण विवाह के समय मंडप में ही खून वमन हो गया, जिसके वजह से 'लतिका का पूरा

परिवारविवाह का विरोध करने लगा। लेकिन इतना होने के बावजुद लतिका अपनी वफादारी का परिचय देते हुए रेणु के साथ विवाह करने के लिएकटिबध्द रही अतः सभी लोंगों को विवश होकर बीमार व्यक्ति के साथ उसका विवाह कर देना ही पड़ा। हालाँकि उस समय भी उन्हें दो आदमियों ने कंधा में हाथ लगाकर मंडप में बैठाया क्योंकि वे टी.बी. रोग के कारण बहुत कमजोर हो गये थे।

विवाहोपरान्त बंगाली समाजकी परम्परा के अनुसार एक थाली मेंखीर, मछली और अन्य वस्तुएँ रखकर बधू के समक्ष वर कहता है–'' आज से बधू का सम्पूर्ण खर्च मैं उठाऊँगा''.... लेकिन यहँलतिका ने एक आदर्श पेश करते हुए उस परम्परा के प्रतिकुल कार्य कर एक मिशालकायम किया औरउसने अपने बीमार पति के सम्पूर्ण खर्च उठाने की वर की जगह स्वयं वधू लतिका ने प्रतिज्ञा की। इतना ही नहीं, वह अजीवन माँ नहीं बनने का संकल्प भी ले लिया और गर्भाशय निकलवा दिया। जिसके कारण वह कभी आजीवन माँ नहीं सकी। प्रेमी के लिए प्रेमिका के द्वारा निश्चल निष्कपट एंव पवित्र प्यार समर्पण करने का प्रमाण, इससे बढ़कर दूसरा ही नहीं हो सकता?

1955 के आसपास पटना में ही थे तब 'मैला आँचल'(उपन्यास) लिखा और प्रकाशित कराने का प्रयास करने लगे। किन्तु, आर्थिक अभाव के कारण छपने में कठिनाई हो रही थी। बाद में लतिका के आर्थिक सहयोग से वह छप सका। अपने प्रथम उपन्यास मैला आँचल से ही उनकी लोकप्रियता और शिष्टता शिखर पर पहुँच गयी। उनकी अन्य कथा–कृतियाँ हैः–'परती परिकथा, जुलूस,दीर्घतमा, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड (उपन्यास), ठुमरी, आहिसा रात्रि की महक, अग्निखोर (कहानी संग्रह), ऋण जल, धन जल ,नेपालीक्रान्तिकथा (रिर्पोताज) आदि।

रेणु ने अपने रिपोर्ताज में नेपाल के जनतंत्रात्मक प्रणाली के संदर्भ में उल्लेख किया है कि–

1947 का मजदूरों का यह आंदोलन 1950 में हुए राणाशाही के विरूध्द संग्राम की पृष्ठभूमि बना। यह नेपाल की जनता में जागरण का पहला शंखनाद था। अक्टूबर 1950 में हुए नेपाल में क्रांतिप्रारंभ हुई थी और 1951 की फरवरी, के अंत में नेपाल में पहली बार वहां लोकतंत्र की स्थापन हुई। रेणु ने 'नेपालीक्रांतिकथा' में इस रोमहर्षक युध्द का जीवंत चित्र उपस्थित किया है।1950 के सितम्बर महीने में उनकी पिता की मृत्यु हो गई थी और अक्टूबरमहीने में छोटे भाई महेंद्र की। इस दोहरे शोक की अवस्था में वे पड़े हुए थे। 'नेपालीक्रांति–कथा' नामक रिपोर्ताज के अंत में रेणु ने इस विषय में लिखा है–'दो महीना पहले शोकाकुल अवस्था में सांदाज्यु (बी.पी) का पत्र मिला था–तुम्हारे पिताजी और छोटे भाईकी मृत्यु एक ही पखवाड़े में हुए और इस दोहरेदुख को तुमझेल रहे हो, मालुम हुआ। तुम्हारे दुख को अनुभव कर रहा हुँ। किंतु इस तरह शोक–संवाद मिलेंगे–यहाँ आकर देखो–कितने लोग मरने के लिए आए हुए हैं। इस वर्ष का अंत होते–होते तक पता नहीं तुमकों और कितने प्रियजनों की मृत्यु के समाचार सुनने और सहने को मिलें। पत्र पाते ही यहाँआ जाओ। एक बार यहाँ आओ तो सही। फिर, न हो तो, वापस चले जाना। तुम्हारा, सांदाज्यु!''

1949 ई. पटना में आयी महानंदा नदी की बाढ़ का चित्रण करते हुए वे मालिक और कुत्ते के अटुट प्रेम को दर्शन वाला एक प्रंसग रखते हैं। रेणु का लगाव कुत्तों से कितने अधिक था, यह सभी लोग लगभग जानते है। वे कुत्ता पालते भी थे। उन्होंने अपने कुत्तें 'सिप्पी' के दिवंगत होन जाने के बाद एक मार्मिक संस्मरण 'पत्र शैली' में लिखा है। पटना–जल प्रलय के पहले अध्याय का शीर्षक ही है ''कुत्ते कर आवाज''!

रेणु ने अपने दाम्पत्य जीवन के कई प्रसंगों का वर्णन किया है। इसी क्रम में निम्नलिखित प्रसंग अवलोकनीय है :–

''ए कि? जल चले गेठे?कले जल नई ? बड्डो मुश्किल''
जलविहीन 'हैडपंप' के हैंडल को चलाती हुई लतिकाजी ने कहा–
''किन्तु, पुनपुनकी बाढ़ के समय तो पानी कभी बन्द नहीं हुआ?''

'' अरे दुरतोमार...पुनपुन की बाढ़ की बात। मैं पूछ रही हूँ कि अब क्या होगा?... देखूँ, रोमेटो की मां के कल में है वहाँ भी...।'' राजेन्द्रनगर के इलाके में ऊपर के तल्लों में पानी की किल्लत हमेशा ही रहती है। प्रेशर कम रहता है। बहुत दिनों तक कष्टझेलने के बाद, तीन साल पहले हमने सड़क के किनारे 'अंडरग्राउड मेन लाइन' में डेढ सौ फीट पाइप जुड़वाकर 'हैंडपाइप' लगवाया। गाँव के 'ट्यूबवेल' का पानी जब सूख जाता हैं–हम ऊपर से पानीडालकर उसको पुनर्जिवित करते हैं। यहाँभी वही करना होगा। बड़े ऐ मग पसनी लिया, पंप की थुथनी को ऊपर की ओर पानी डाल दिया, फिर हैंडिल, चलाने लगा। तबतक लतिकाजी छोटी बाल्टी में पानी लेकर पहुँची और मुझपर बरस पड़ी–एक 'मग पानी बर्बाद कर दिया न' मुन्नी की माँ के घर से पानी ला रही हूँ।'' वह घड़े में पानी डालकर फिर बाहर गयी तो मैंने हैंडपंप को फिर एक मग पानी पिलाया और हैंडिल चलाने लगा, वह उल्टे पाँव दौड़ी आयी ''तुम समझते क्यों नहीं? फिर एक मग पानी बर्बाद किया न? जरा बुध्दि से भी काम कर लिया करो। जब मेन पाइप में ही पानी नहीं तो....मीठे–मीठे... बेकार पानी डालकर...

तबतक पंप में जान आ गयी थी। पंप की उल्टी हुई, थुथनी से पानी का फब्बारा निकला और मैं भींग गया। पुरूषार्थ भरे स्वर में कहा–'' बुध्दि से काम लेकर तो अबतक जी रहा हुँ श्रीमती जी!लिजिए, घर में जितने बर्तन है–पात्र–कुपात्र, सबमें पानी स्टोर कर लिजिए। श्री कृष्णपुरी की ओर न पानी है, न बिजली। इधर भी अबतक है–है...''

रिर्पोताज में रेणु स्वयं बताते है।– मैं 1952ई. तक सक्रिय राजनीति में थी।... अपने क्षेत्र के कई किसान आन्दोलन, कश्त–संघर्ष तथा मिल मजदूरों की हड़ताल के नारे लगाने और भाषण देने के अलावा पार्टी–पत्रिकाओं में उन संघर्षो के अनुभव पर रिपोर्ताज वगैरह लिखा करता था। बाद में मैंने पार्टी छोड़ दी। सक्रिय राजनीति से अलग होकर भीराजनीति संन्यास नहीं ले सका।... पूछिए तो राजनीति ने मुझे बहुत दिया। अपने जिले के गाँव–गाँव में घुमा, लोगों से मिला, उनके सुख–दुख का परिचय हुआ, चंदे वसूले। अपनी सक्रियता के कारण साथियो के साथ गाँव में रात के वक्त भी डेरा डालना पड़ता।... रात में दूर से कहींढोलक–झांझ पर नाच–गान की स्वर लहरी मंडराती आती औरमैं अपनीसाथियों को सोते छोड़वही चल देता। कहीं विदेशिया' कही 'जालिम सिंह सिपहिया' और मैं ननदी–भौजइया के नाच–गान। वे नाच देखने से ज्यादा नाच देखनेवालों को देखकर अचरज से मुग्ध हो जाते। तब समझा कि हमारे लच्छेदार भाषणों से ज्यादा प्रभाव उस सांस्कृतिक चेतना का होता है, जो उन्हें मुसीबत में भी गाते रहने के लिए मजबुर किये रहती है।

इनकी साहित्यक प्रतिभा और सेवाओं के लिए इन्हे भारत सरकार के द्वारा 1970 ई.में पद्मश्री की सम्मानोपाधि से विभूषित किया गया। किन्तु, बिहार आन्दोलन के दौरान जयप्रकाश नारायण पर पुलिस के द्वारा लाठी चार्ज किया गया तो रेणु जी उसकी विरोध में आकार पद्मश्री का अलंकारण राष्ट्रपति को लौटा दिया। वे फरविस गंज से निर्दलीय बिहार विधान सभा के लिए 1973 ई. में चुनाव लड़े थे लेकिन सफलता नहीं मिल सकी।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दरम्यान जयप्रकाश जी के द्वारा आवाहितक्रान्ति में रेणु जी लगभग चौहत्तर दिन पूर्णिया जेल में बन्द रहे और उन्हें काफी विरोधझेलना पड़ा। आपतकाल के दौरान वे कर्पूरी ठाकुर के साथ नेपाल में जाकर भूमिगत हो गये। 1974 ई. में पुनःकर्पूरी ठाकुर के साथ लौटकर पटना आ गये। वे भयभीत रहते थे। जिसके कारण 'लतिका' ने इन्हें एक इंग्लड की बनी रिवाल्वर खरादी कर दे दी थी। जिसे वे हमेशा कार्यकाल में कमर से बाँध कर रखते थे।

इनकेअक्षय यश की प्राप्ति का आधार है, इनकाकथा–साहित्य। अपनी कहानियों में रेणु ने गँवई तेबर को ठीक से पहचान है और उसे यथार्थ का फलक प्रदान किया है। जिसका साधन है– भाषा और वस्तु की आँचलिकता। रेणु हिन्दी साहित्य के प्रथम लेखक हैं, जिन्होंने गीत–संगीत पर नयी बहस छेड़ी थी। उनकी कहानियों में संगीत के संवादनात्मक स्वर के साथ–साथ कलात्मक चित्रात्मकता भी द्रष्टव्य है। उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है–गँवई स्पर्श और मिट्टी की गंधसे कथा की आत्मा को अभिभूत होना। उदाहरण स्वरूप इनके द्वारा लिखी गयी संवेदनशील 'संवदिया' कहानी लिजिए–जिसमें ग्रामीण यथार्थ अधोगति तथा शेष जीवन प्रतिकुल की दुहरी प्रतिष्ठाढोते रहने की उसकी करूणा विवशत के साथ मायके पर उसकी आशापूर्ण विश्वास बड़ा की

मर्मस्पर्श चित्रण किया गया है। इस कहानी में उस विधवा के गाँव के ऐ निठल्ले, किन्तु, संवेदनशील संवदिया के उत्तरदायित्व और उसकी भावना के अन्त : संघर्ष का भी बड़ा ही प्रभावशील अंकन हुआहै। संवदिया कहानी में एक संदेश वाहक का कर्तव्य बोध एवं उसकी निजी भावना के संघर्ष में उसकी भावना की ही विजय हुई थी।

इनकी पहली कहानी 'बटबाबा' है, जो विश्वमित्र पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इनकी सुप्रसिध्द कहानी 'मारे गये गुलफाम' पर आधारित 'तिसरी कसम' फिल्म का निर्माण शंकर शैलेन्द्र के सहयोग से किया गया। जिसमें अभिनेता के रूप में राजकपुर और अभिनेत्री वहीदा रहमान ने भूमिका। कहानी और संवाद स्वंय रेणु जी द्वारा लिखे गये औरसंगीत जाने–माने संगीतकार शंकर शैलेन्द्र ने दिया। कैमरा मैन के रूप में सुब्रत राय का नाम उल्लेखनीय है। यह फिल्म इतनी लोकप्रिय बन गयी कि सिनेमाघ रोंमेंमहीनों भीड़ चलती रही।

फिल्म की स्टोरी अच्छी है किन्तु, फिल्म दुखान्त है। दो चार लाख की जगह करीब अठ्ठाराह बीस लाख रूपये की लगात से यह फिल्मबनी। अन्त में आर्थिक अभाव के कारण राजकपूर फिल्म का दुखान्त से दूर करना चाहते थे और कथा में 'परिवर्तन करने के लिए कहा जा रहा था, परन्तुरेणू स्टोरी परिवर्तन के पक्ष में बिलकुल नहीं हुए और उसकी स्टोरी ज्यों की त्यों रह गया। 'तिसरीकसम' के चक्कर में रेणु जी ने आकाशवाणी की नौकरी भीछोड दी। फिल्म को बनने के बाद वे पाँच सौ रूपयके कर्ज में डुबे हुए थे। अपनी आर्थिक स्थिती को देखते हुए उन्होंने'दिनमान' में लिखना शुरू किया और चार–पाँच वर्षो तक बिहार से लगातार लिखते रहे।

रेणुजी ने स्वंय कहा है कि– ''मै गाँव छोड़कर पटना चला गया और पटना से इलाहाबाद। उस समय सारे हिन्दुस्तान के लोग एक दिखाईपड़ रहे थे। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अब देश में जहाँ भी जाता हुँ लोग पूछते है–आप किस उपजाति के है। आप किस धर्म को माननेवाले हैं? आदि–आदि।यह सुनकर मुझे दुख होता है।''

अपने रिपोर्ताज में रेणु जीद ने अपने जीवन के विभिन्न प्रसंगों का वर्णन किया है। प्रांरभ में समाजवादी विचारधाराके लेखक थे। उस समय समाजवादी दल का एक साप्ताहिक पत्र जनता नाम से निकला करता था। जिसके संपादक रामवृक्ष बेनीपुरी जी थे। रेणु जी इस सप्ताहिक पत्र में रिर्पोताज लिखा करते थे। किन्तु, रेणु जी को लेखनी को बंदिश या राजनीति जकड़न पसंद नहीं थी। उसके कारण उन्होंने पार्टीवादी राजनीति से सन्यास ले लिया। किन्तु राजनीति कार्यकर्त्ता के रूप में जो अनुभव उन्हें हुआ, उसी के कारण वे 'मैला आँचल' एवं परती परिकथा जैसे कालजयी उपन्यास लिख सके। दूसरा कोई लेखक इतनेविराट परिदृश्य का उपन्यासनहीं लिख सका।

गीतकार शंकर शैलेन्द्र की असामयिक मृत्यु से उन्हें धक्का लगा और आँसू झड़ने लगे। पटना के लेखक, कलाकार उनके पास पहुँचते थे और उनकी सहायता करने थे। उनमें हैं रामबचन राय, सत्यनारायण, परेश, नरेन्द्र घायल आदि जो उनकी जरूरत की चीजों को उन तक पहुँचाते थे और उनकी खोज–खबर लगातार लेते थे।

रेणु पटना में जब भी रहते शाम को काफी हाऊस जरूर जाते। वहाँ साहित्यकारों, पत्रकारों, राजनीतिज्ञों के बीच गपशप होता, वे बांग्ला कथाकार सतीशनाथ भादुड़ी को अपना गुरू मानते थे। उनकी कही बातों को आदर के साथ स्वीकार करते थे। उनसे रेणुजी का बहुत आत्मी संबंध था ।

रेणु को वरिष्ठ साहित्यकार एवं दिनमान के संपादक अज्ञेय का सान्निध्य प्राप्त हुआ था। 1966 ई. में मध्य बिहार में अकाल क्षेत्रों को देखने अज्ञेय दिल्ली सें पटना पहुँचे और अपने साथ रेणुजी को भी भ्रमण में ले गये। वे जब भी पटना आते इनसे मिले बिना नहीं जाते।

एक तरफ रेणु लोक जीवन के साथ धीरे –धीरे पैठ बनाने लगे तो दूसरी ओर वे जनता को संगठित करने, गुलामी के बंधनों को तोड़ने के लिए भी कारगर कोशिश करते रहे।उनके अंचल से सटा है विराट नगर। वही उन्होंने कृष्ण प्रसाद कोइराला व्दारा स्थापित आदर्श विद्यालय में शिक्षा पायी थी तथा उनके पाँच पुत्रों के धर्मभाई की तरह नेपाली जनता को जागृत करने के लिए एवं बर्बर राणाशाही की गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष किया था। रेणु ने नेपाली क्रान्ति कथा में नेपाल के अन्तर्गत हुए जनतंत्रात्मक युध्द का विस्तार से वर्णन किया है। रेणु लेखक थे, किन्तु नेपाली क्रांति में उन्होंने हथियार भी उठाई थी। उन्होंने अपने 'टामीगन' का नाम दिया था 'रक्तचाप' और अपनी 'पार्कर 51' कलम को 'सिध्दिदा '। उन्होंने इन दोनों अस्त्रों का प्रयोग इस क्रांति में किया था।1975 ई. मे

जब सोन नदी के पानी से पटना शहर भर गया था, तब इमरजेंसी के दिन थे और रेणु पेष्टिक अल्सर से पीड़ित थे। इस तरह शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्तर पर वे त्रासद अवस्था में जी रहे थे।

असाध्य रोग टी. बी. के कारण उनका कलेजा सड़ चुका था और अल्सर का रूप ले लिया था। अचानक 16 नवम्बर 1976 ई. को उनको खून की उल्टी हो गयी। तब उन्हें अस्पताल में भर्त्ती करा दिया गया। 24 मार्च 1977 को उनका ऑपरेशन हुआ लेकिन ऑपरेशन के बाद होश में नहीं आये। 11 अप्रैल 1977 ई. को यह कांतिदूत हमेशा के लिए विदा हो गये और साहित्य संसार में एक सन्नाटा छा गया, जिसकी पूर्ति आजतक नहीं हो सकी।

विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला ने इनकी मृत्यु के पश्चात उनपर लिखें
सस्मरण में लिखा है '' सबसे बढ़कर रेणु मेरा भाई था। उसकी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति और अन्याय तथा दमन का विरोध करने की उग्रता मेरी ही जैसी थी। उनके विचार मेरे जैसे लगते थे।... वह स्वतंत्रता का प्रचण्ड योध्दा था। नेपाल में प्रजातंत्र के संघर्ष में उनसे हमसे कंधा से कंधा मिलाया। राणा शासन को अपदस्थ करने हेतु नेपाली काँग्रेस ने 1950 ई. में जो सशक्त क्रान्ति छेड़ी थी, उसमें रेणु भी शामिल हो गया और मुक्ति सेना की फौजी वर्दी में मेरे साथ बन्दूक लेकर मोर्चे पर कूद पड़ा। क्रान्ति के समय उसने नेपाली क्रान्ति के प्रचार– प्रचार तथा विराट् नगर में स्थापित एक गैर कानूनी आकाशवाणी के संगठण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की''।

संदर्भ संकेत :–

1) हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में पुरूष – डॉ. संध्या मेरिया
2) हिंदी आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन – डॉ. भारत सगरे